Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

आत्मकथा साहित्य में भारतीय चिंतन एवं दर्शन

डॉ. वीणी विकास ढोमणे
हिंदी विभाग,
जे.एम. पटेल कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
भंडारा (महाराष्ट्र) ४४१९०४
vinidhomne25@gmail.com

सारांश

दर्शन का विषय जगत की व्याख्या करना है। इस व्याख्या के विविध रुप होने के कारण विविध दर्शनों का विकास हुआ। सामाजिक, राजनैतिक तथा साहित्य कर्म से नहीं इसका संबंध विचार के लिए, साधना के लिए तथा मोक्ष प्राप्ति करना भी है। इस तरह दर्शन का गहरा संबंध मानव जीवन के प्रत्येक पहलू और क्षेत्र से हैं। अतः आत्मकथा साहित्य जो कि लेखक का आत्मा विवेचन, आत्मा अनुभव की कथा है तथा साहित्य कि इस विधा का लेखन वही व्यक्ति करता है जिसकी जीवन गाथा कुछ विशिष्ठ हो। आत्मकथाकार ने अपने जीवन लक्ष की ओर अग्रसर होने के लिए आत्मश्लाघा के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए जगत में प्रवेश किया जो कि आत्मकथा में उल्लेखित होता है। आत्मकथा में लेखक जीवन के अलावा जगत की स्थितियों और उनके संदर्भ में उत्पन्न मानव के मनोभावों का भी चित्रण करता है। इस दृष्टि से जीवन के जिस कोण से मानव जीवन की समस्याओं, उसके संदर्भ और उसकी गति को भी देखता है। वहीं लेखक का दृष्टिकोण विचार या जीवन दर्शन है। यही भारतीय दर्शन और जीवन की यात्रा है। निःसंदेह यह यात्रा पार करने के लिए आत्मकथा सबसे अच्छा स्त्रोत है।

शोधपत्र

भारतीय दर्शन के केंद्र में उच्चतर भाव तथा चिंतन भूमि का बिन्दु मानव ही रहा है। इससे भी बढ़कर वह प्राणी मात्र से भी जोड़ना चाहता है। लेखक में इस चिंतनधारा का प्रभाव स्वाभाविक है। मानव चिंतन अथवा विचारधारा की अन्य किसी अभिव्यक्ति की भाँति दर्शन भी अंतिम विश्लेषण में मानव जीवन के सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है। भारतीय विचार के निरंतर विकास को विभिन्न लोगों ने विभिन्न समयों में अपनी-अपनी दृष्टि से समृद्ध बनाया है। हमारे देश की दार्शनिक विचारधारा में एक वैशिष्ट्य है जो अनियंत्रित नहीं पाया जाता है, वह है 'मोक्ष की प्राप्ति'। दर्शन का विषय जगत की व्याख्या करना और इस विविध व्याख्या के माध्यम से विभिन्न दर्शनों का विकास करना है। दर्शन का संबंध सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्य क्षेत्र से ही नहीं इसका संबंध विचार के लिए,

साधना के लिए तथा मोक्ष प्राप्ति से भी है। इस तरह दर्शन का गहरा संबंध मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से हैं। दर्शन का उपयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होता है क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र की समस्याओं का समाधान इसमें दृष्टिगोचर होता है। दार्शनिक साहित्य से सिद्ध होता है कि लेखक के जीवन अनुभव से दार्शनिकता का महत्त्व ज्ञात होता है। यह हमें पीढ़ी दर पीढ़ी उपलब्ध रहता है। इस प्रकार दर्शन और साहित्य का परस्पर निकट का संबंध है।

चिंतकों ने अपने दृष्टिकोण से दर्शन की व्याख्या की है। दर्शन का अर्थ है देखना, निगाह, राह, मत, वाद, आत्मा है अर्थात 'आत्मा या सत्य का दर्शन या साक्षात्कार करना।' इस प्रकार दर्शन का मुख्य स्त्रोत्र है आत्म ज्ञान। 'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यारित तव्यः।'(१) उपनिषद के इस वचन में आत्मज्ञान की जो साधना बताई गयी है उसके प्रारम्भिक भाग को ही दर्शन कहते है। आत्मा सब कुछ ग्रहण करता है, प्राप्त करता है और अखंड अंनत और निरंतर चलता ही रहता है। इसलिए यह आत्मा है। आत्मा के साक्षात्कार से सुख होता है या नहीं यह कहना कठिन है, किंतु इस की प्राप्ति से हमें अपना केंद्र मिल जाता है। इसके बाद ही सर्व विश्व संस्था यथा स्थित प्रतीत होता है।

हमारे जीवन के सब मूल्य यथार्थ हो जाते हैं। मूल्य परिवर्तन होना ही जीवन परिवर्तन है, जीवनसिद्धि है। आत्म साक्षात्कार एक अदभुत सामर्थ्य हैं। परम शक्ति शान्ति है। इसकी प्राप्ति से कभी भी ह्वास नहीं हो सकता। इसी आत्मा को अंतरआत्मा कहते हैं। परमात्मा कहते हैं। परमब्रम्ह कहते है। आत्माराम कहते है। पुरषोत्तम भी कहते है। मनुष्य मात्रा में निवास होने के कारण इसे नारायण भी कहते है। (२) इस प्रकार आत्माओं को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया है। इस चिंतन की नीव अर्वाचीन काल में भारत के आर्य, पूर्व आदिम कबीलों की मान्यताओं और आकांक्षाओं के प्राचीन आर्यो की संस्कृति ऋग्वेद के सूक्तों में प्रतिबंधित है। यह भौतिकवाद, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद तथा अध्यात्मवाद के बीच युगों तक चलने वाले संघर्ष के दौरान विकसित हुआ और इस्लाम ईसाई धर्म या पश्चिमी दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान से प्राप्त अनेकानेक नए तत्वों को आत्मसात कर के समृद्ध हुआ। इस प्रकार आधुनिक भारतीय चिंतन का उदभव हमारे प्राचीन दार्शनिकों के निश्छल मानवतावाद से हुआ। तत्पश्चात शताब्दियों के दौरान अनेक परिवर्तनो का विकास हुआ।

वस्तुतः आत्मकथा जो की व्यक्ति की आत्मभिव्यक्ति, आत्मविवेचन और आत्मअनुभव की कथा है।आत्मकथा साहित्य का लेखन वही व्यक्ति करता है जिसने अपने जीवन में कुछ विशिष्ठ कार्य एवं विचार होते हैं। अर्थात इन्होंने भी अपने जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए 'आत्मा' के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए स्थूल जगत के सूक्ष्म से सूक्षतम जगत में प्रवेश किया होगा, जो कि इनकी आत्मकथा में उल्लेखित होता है। ज्ञान कि इस क्रमिक विकास में कहीं कोई मतभेद नहीं हैं और ना परस्पर कोई वैमनस्य है।

अन्तःकरण के शुद्ध हो जाने से इस मार्ग में जो पहुँच जाता है वह फिर पीछे कभी नहीं लौटता है। यही भारतीय दर्शन और जीवन की यात्रा है और यह यात्रा हमें साहित्य के माध्यम से पार करना हैं। गोविन्ददास के इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है वे कहते है 'महंतजनों की जीवनियों का अध्ययन मुझे अब सार्वजनिक जीवन की ओर आकर्षित करता जा रहा है। मेरा कभी एक विद्वान का पढ़ा हुआ कथन अनेक बार मुझे याद आ जाता है। अपनी उन्नति का पुरुषार्थ अपने में विद्यमान् रहना यह मानव और पशु का सबसे बड़ा भेद है। एक सीमा के उपरांत जानवर अपनी तरक़्क़ी नहीं कर सकता लेकिन मनुष्य के लिए कोई भी नैसर्गिक सीमाएं नहीं है।' (३)

स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी आत्मकथा में अपने प्रारंभिक जीवन के कटु यथार्थ का वर्णन करते हुए बताया है कैसे स्वामी दयानंद सरस्वती के उपदेशो व 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रभाव से उनके जीवन की कैसे काया पलट हुई। यह महान दार्शनिक विचारों का ही प्रभाव होता है जो मानव के विचारो को प्रभावित करता है । दयानंद सरस्वती के संबंध में उन्होंने लिखा है कि 'आचार्य ऋषि दयानंद ने आर्यावर्त की प्राचीन संस्कृति का सप्रमाणचित्र खींच कर न केवल आर्य संतान के अंदर कि आत्म सम्मान का भाव उत्पन्न किया प्रत्युत यूरोपीय विद्वानों को भी उनकी कल्पनाओं की असारता दिखलाकर चक्कर में डाल दिया। हिन्दू युवक अपने प्रत्येक आचार व्यवहार को दुखीत और यूरोपीय यूनियन के गिरे से गिरे अत्याचार और दुराचार को ही आदर समझा करते थे। मैंने भी उसी विद्यालय में शिक्षा पायी थी जिसने हिंदू युवकों को अपनी प्राचीन संस्कृति का शत्रु बना दिया था।(४) इसी प्रकार श्री वियोगी हरि ने अपना संपूर्ण जीवन गांधी जी के सिद्धांतों के अनुसरण में व्यतीत किया। परंपरा के संबंध में भी लिखते हैं 'परंपरा प्राप्त श्रद्धा के सहारे राम, कृष्ण, बुद्ध की पूजा करने वाले धर्मभीरु घर में जन्म लेकर मैंने भी खोया नहीं ,कुछ शायद पाया ही। अधिक भी पा सकता था पर दोष मेरी निर्बल काँपते हुए हाथों का रहा जो प्राप्त वस्तु को ठीक तरह संभाल नहीं सके।'(५)

आत्मकथा में लेखक के अपने जीवन के अलावा जगत की स्थितियों और उनके संदर्भ में उत्पन्न मनोभावों का भी चित्रण रहता है। वह जिस दृष्टि से जीवन के जिस कोण से मानव जीवन की समस्याओं के संघर्षों और गति को देखता है, वहीं लेखक का दृष्टिकोण विचार या जीवन दर्शन है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखक के जीवन और दर्शन में कितना समन्वय है। एक व्यक्ति होने के नाते वह किसी ने किसी विचार और जीवन दर्शन को मानने वाला होता है। अतः एक काल में मानव जीवन को प्रभावित व गति देने वाले जीवन दर्शन साहित्य से तैयार हुए दृष्टिकोण को जीवन दर्शन कहते हैं। इस प्रकार जीवन और दर्शन एक मार्ग में साथ साथ चलने वाले दो पथिक है और इन दोनों की सत्ता एक ही कारण पर निर्भर

है. इसलिए जो बातें जीवन के संबंध में देखी जाती है वे ही दर्शन के संबंध में भी कही जा सकती है।

आज भारत पुराने और नए के बीच संघर्ष की पीड़ा पूर्ण दौर से गुज़र रहा है। जनता की विभिन्न वर्ग तथा समूह उपस्थित समस्याओं के विभिन्न समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। ये अंतर्विरोधपूर्ण हित, जनता की विचारधारा और दार्शनिक दृष्टिकोण में भी प्रतिबंधित होते हैं। स्वाधीनता के पश्चात हिन्दी साहित्य को व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले जीवन दर्शनों में गांधीवादी, विनोबावाद, मार्क्सवाद, अरविंदवाद आदि उल्लेखनीय हैं। इन विशिष्ट दर्शनों से प्रभावित एक लेखक के साथ उसकी निजी कुछ न कुछ साधना होती है। तद्सम्बन्ध में महादेवी वर्मा के विचार कुछ इस तरह है 'मेरे सम्पूर्ण मानसिक विकास में बुद्धि प्रसून चिंतन का भी विशेष महत्व है जो जीवन की बाह्य व्यवस्थाओं के अध्ययन में गति पाता रहा है।

अनेक सामाजिक रुढियों में दबे हुए निर्जीव संस्कारों का भार ढोते हुए और विविध विषमताओं में साँस लेने को भी अवकाश न पाते हुए जीवन के ज्ञान ने मेरे भाव जगत की वेदना पर गहराई और जीवन को क्रिया दी है। (६) इस प्रकार यह दर्शन व्यक्ति का अपना स्वत्रन्त्रवादी दर्शन हैं, जो सामाजिकता से व्यक्ति का बंधन स्वीकार कर व्यक्ति की स्वतंत्रता को मानने वाला जीवन दर्शन है। किन्तु इसमें भी दो तरह की दार्शनिकता का उल्लेख है पहला जो सामाजिकता को अपनाते हुए अपने दृष्टिकोण को भी महत्व देता है, दूसरा समाज को बाहरीपन समझ कर स्वयं के ही दृष्टिकोणों को महत्व देता है। परंतु परंपरागत भारतीय समाज में सामाजिकता का महत्त्व है वह व्यक्ति के न्यूनतम कुदरती एकान्त को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। किन्तु यदि वह सामाजिक न होकर आत्मकेन्द्रित हो और वह घोर व्यक्तिवादी, मानव संबंधों के प्रति अनास्थावादी, संशयवादी, अविश्वासी, व्यक्ति के स्वार्थ को महत्व देने वाला तथा क्षण के भोग में विश्वास करने वाला हो तो उसकी अनुभूति भिन्न होते है।

महान चिंतकों की दृष्टि हमेशा मानवतावादी रही है और यही उनका जीवन दर्शन रहा है। महान चिंतकों में गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में जीवन के प्रति कुछ आदर्शवादी पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इनमें सत्य,अहिंसा और प्रेम के सिद्धांत मार्गदर्शक है। यही कारण है कि कि प्रत्येक सत्याग्रही से वह कुछ मूलभूत क्षणों की विशेष रुप से अपेक्षा करते थे। सत्य,अहिंसा, त्याग,अस्तेय, अपरिग्रह, उपासना सरल जीवन और ईश्वर के प्रति विश्वास ये कुछ विशेष नैतिक आदेश थे जिनको वह महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने लिखा 'स्तुति, उपासना, प्रार्थना अंधविश्वास नहीं बल्कि उतनी अथवा उससे भी अधिक सच बताते हैं। जितना कि हम खाते हैं, पीते हैं, चलते हैं, बैठते हैं ,यह सच है। बल्कि यो कहने में भी अत्युक्ति नहीं है कि यही एकमात्र सच है बाकि सब बातें झूठ है, मिथ्या है। ऐसी उपासना ऐसी प्रार्थना वाणी का वैभव

नहीं है उसका मूल कंठ नहीं बल्कि मूल हृदय हैं। अतएवं यदि हम हृदय को निर्मल बना लें, उसके तारों का सुर मिला लें तो इसमें से जो स्वर निकलता है, वह गगन गामी हो जाता है। विकार रुपी शुद्धि के लिए हार्दिक उपासना एक जीवन की कड़ी है। इस विषय में मुझे ज़रा भी संदेह नहीं है परंतु इस प्रसादी को पाने के लिए हमारे अंदर पूरी-पूरी नम्रता होनी चाहिए।(७)

गांधीजी को विश्वास था कि मनुष्य की अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्तियों की नैतिक बुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा मनुष्य समाज को अपने इच्छा के अनुरुप बदल सकता है। गांधीजी कि आदर्शवादिता के कारण भारत के सामाजिक और राजनैतिक विकास पर इन सिद्धांतों का तत्काल प्रभाव पड़ा। सामाजिक और राजनैतिक कार्यों में उन्होंने स्वयं इन सिद्धांतों के बल पर बड़ी बड़ी समस्याओं का निराकरण किया। यही व्यापक प्रेरणा के कारण हज़ारों नवयुवक- नवयुवतियों ने आत्म बलिदान की महान पक्ष पर अपने आप को झोंक दिया। हँसते- हँसते लोगों ने स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया। आज इसी के परिणामस्वरूप हम इस स्वतंत्र देश में साँसें ले रहे हैं। गांधी जी ने अपनी नैतिक आदर्शों के बल पर राजनीतिक ही नहीं सामाजिक कार्य जैसे छुआ- छूत, मजदूर, पूंजीपति वर्ग संघर्ष, वर्ग भेद आदि समस्याओं का समाधान किया है । ऐसे ही विनोबा दर्शन एवं अरविंद दर्शन भी गांधीजी का प्रयोगात्मक व्यावहारिक रुप है। किंतु विनोबा का जीवन दर्शन सामाजिक था, वहीं अरविंद का जीवन दर्शन अध्यात्म था।

कवि- कलाकार, दार्शनिक, मानवतावादी, शिक्षाशास्त्री तथा स्वतंत्रता के संदेशवाहक रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विचार यद्यपि आदर्शवाद से लिपटे हुए थे न तो वो अमूर्त थे और न निरुद्देश्य थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन दर्शन के संबंध में एक निश्चित अवधि तक का ही विवेचन किया है किन्तु उनके नाटक, उपन्यासों, कहानियां विगत युग के अंधे मताग्रहों, अंधविश्वासों और विदेशी शासन के आतंक और अन्याय के विरुद्ध एक देश भक्त और सुधारक के आंकड़ों से भरपूर है। इस प्रकार उनका जीवन दर्शन भी देश भक्तिपूर्ण और मानवतावादी था। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा 'आत्मकथा पाने की राह का जो मुझे अनुभव मिला उसने मुझे यही सिखाया कि अच्छाई के लिए किए गए उपायों की बजाए सामने आयी बुराई से भी डरने की ज़रूरत नहीं है आत्मज्ञान पाते समय अपने आप पर भरोसा ना किया जाए तो गुलामी मिलती है। (८)

नेहरु जी ने अपना सामाजिक जीवन तिलक और गांधी जी के शिष्य के रूप में आरंभ किया। उनकी आत्मकथा में उनके राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण का उल्लेख है। नेहरुजी का विश्व दृष्टिकोण मार्क्सवादी चिंतन के अध्ययन, सामाजिक घटनाक्रम के नियमों में उनकी समझदारी और जीवन के प्रति उनकी वैज्ञानिक दृष्टिकोण की उपज था। वह इस बात पर जोर देते है कि मार्क्सवाद का सच्चा मूल्य इस तथ्य

में निहित है की उसमें मत बाद नहीं है और यथार्थ के प्रति उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक हैं। इससे मनुष्यों के जटिल सामाजिक घटनाक्रम को समझने और मानवता को आज के हित बदलने में सहायता मिलती है। नेहरुजी हमेशा भारत के अतीत को जानने के लिए इतिहास के सैद्धांतिक छात्र के रुप में भी नहीं रहे वरन स्वतंत्रता तथा एक नई समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष में सक्रियता से जूझते रहे। वे उस व्यवस्था की खोज करना चाहते थे जो सामाजिक विकास तथा सम सामायिक समाज को बदलने में लोकाचार को नियंत्रित करें।

इस प्रकार जवाहर लाल नेहरू के लिए समाजवाद केवल एक आर्थिक प्रणाली न होकर उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने अपनी आत्मकथा में समाज की सत्यता को उल्लेखित कर कुछ इस प्रकार अपने विचार प्रकट किये 'उनकी मुसीबतों को और उनकी अपार कृतज्ञता को देखकर मैं दुख और शर्म के मारे गढ़ गया। दुःख तो हिन्दुस्तान की जबरदस्त गरीबी और जिल्लत पर और शर्म अपनी आराम की ज़िंदगी पर और शहरों की कुछ न कुछ राजनीति पर, जिसमें भारत के इन अध नंगे करोड़ों पुत्र पुत्रियों के लिए कोई स्थान न था। भूके, नंगे, दलित पीड़ित भारत वर्ष एक नया चित्र मेरी आँखों के सामने खड़ा होता हुआ दिखाई दिया। हम लोगों में जो दूर शहर से उन्हें देखने कभी कभी आ जाते हैं के प्रति उनकी श्रद्धा को देख कर मैं परेशानी में पड़ गया और उसे मुझमें कुछ जिम्मेदारी का भाव पैदा कर दिया, जिसकी कल्पना से दिल दहल गया। (९)

यद्यपि संसार के बाह्य भौतिक स्वरुप में, संचार साधनों में, वैज्ञानिक आविष्कारों आदि की उन्नति में बहुत परिवर्तन हुए है, किंतु इसके आंतरिक आध्यात्मिक पक्ष में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। मानव जाति के वास्तविक हितो, धर्म के प्रति गंभीर आवेगों और दार्शनिक ज्ञान की मुख्य समस्याओं आदि ने वैसी उन्नति नहीं की जैसी भौतिक पदार्थों ने की है। मानव मस्तिष्क के इतिहास में भारतीय विचारधारा अपना एक अत्यंत शक्तिशाली और भाव पूर्ण स्थान रखती है। महान विचारकों के भाव कभी पुराने अथवा अव्यवहार्य नहीं होते प्रत्युत वह उस उन्नति को जो उसे मिलती सी प्रतीत होती है सजीव प्रेरणा देते हैं। कभी कभी अत्यंत प्राचीन भावनामयी कल्पनायें हमें अपने में ढाल लेती हैं क्योंकि 'अंतर्दृष्टि' आधुनिकता के ऊपर निर्भर नहीं करती।(१०)

'दर्शन' के महान ज्ञाता डॉक्टर राधाकृष्णन का उक्त उदगार का विवेचन हमें विभिन्न आत्मकथाओं में मिलता है। किन्तु कई महान चिन्तकों ने इतिहास के साथ साथ व्यक्तिगत प्रयोगों को भी महत्व दिया। बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा में लिखते है ज्ञान चाहे वह अनुभवों से प्राप्त हो चाहे, अध्ययन से, मनुष्य को उदार बनाता है। कम से कम मनुष्य के भीतरी बंधनों से मुक्त कराता है। अपने बंधनों से शायद सबसे कठिन बंधन वह ही है। बाहर के बंधन तो इतिहास की प्रक्रिया से प्रभावित होंगे पर क्या व्यक्ति इतिहास की प्रतीक्षा करता बैठा

रहेगा? नहीं वह अपने व्यक्तिगत प्रयोगों और अभ्यासों से किसी अंश में इतिहास की प्रक्रिया को अधिक सक्रिय कर सकता है।(११)

भारत का दार्शनिक अतीत स्वर्णमय है। उसका भविष्य भी ऐसा ही होगा यदि अनुभव, तर्क और शास्त्र में प्राचीनता के साथ साथ नवीनता का भी सामंजस्य रहे और विभिन्न जिज्ञासाओं, भ्रमो, समस्याओं का निराकरण कर वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सके। जैसे कन्हैया लाल मुंशी ने आर्यावर की भावना को नई दृष्टि के अनुसार आलोखित किया आर्य शक्तिशाली है, उसकी बुद्धि राग -द्वेष से अस्थिर नहीं है, वह नित्य सत्वस्य है। वह अपनी आत्मा, उसकी विशिष्टता, अपने स्वभाव और शक्ति के रहस्य को देख सकता है। वह आयुक्त नहीं, यह एक आत्मसंवादी शक्ति है ,योगी है ।

अतः वर्तमान में जीवन दृर्शन द्वारा जगत तथा मानव जीवन की जगत के संबंधों के अधिक गहरे प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित है। परिवर्तनशील समाज द्वारा उपस्थित समस्याओं के समाधान के लिए उसे सक्षम बनाकर मनुष्य के जीवन को नया अर्थ तथा नई अंतर्वस्तु प्रदान करता है। इसी प्रकार आत्मकथा साहित्य में प्रत्यक्ष सत्य दर्शन के द्वारा संसार की सत्यता का बोध जाग्रत कर हमको व्यक्तित्व की रक्षा करने में उसका प्रयोग करना है। एकात्मवाद के सूत्र में ज्ञान, कर्म, क्रिया का समन्वय प्रदान करना है। जिससे उस आत्मकथाकार के जीवन दर्शन की धूप-छाँहमयी जीवन की अनेकरुपता में हम मंगलमय दार्शनिक बोध से अनुप्राणित हो सकें।

ग्रन्थ सूची -

१. भारतीय दर्शन के जीवंत प्रश्न, पृष्ठ २३
२. भारतीय दर्शन के जीवंत प्रश्न, पृष्ठ ३०
३. आत्मनिरीक्षण भाग १ - सेठ गोविंददास, पृष्ठ १९६
४. कल्याण मार्ग के पथिक -स्वामी श्रद्धानन्द, प्रस्तावना से
५. मेरा जीवन प्रवाह - वियोगी हरी, पृष्ठ १२९
६. साहित्यकारों साहित्यकारों की आत्मकथाएं -क्षेमचन्द्र सुमन, पृष्ठ १४४
७. सत्य के प्रयोग - महात्मा गांधी, पृष्ठ ७६
८. आत्मकथा - रविंद्रनाथ टैगोर, पृष्ठ ५२
९. मेरी कहानी- जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ ८५
१०. भारतीय दर्शन- श्री राधाकृष्णन, प्रस्तावना से
११. नीड़ का निर्माण फिर - हरिवंशराय बच्चन, पृष्ठ २६४
१२. सीधी चट्टान - कन्हैयालाल मुंशी, पृष्ठ ३२२